पौष-चैत्र विक्रम संवत् २०७६
जनवरी-मार्च, २०१९
भाग-८०, अंक-१
॥ सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ॥
कुम्भ 2019
प्रयागराज
हिन्दुस्तानी
त्रैमासिक
कुम्भ विशेषांक
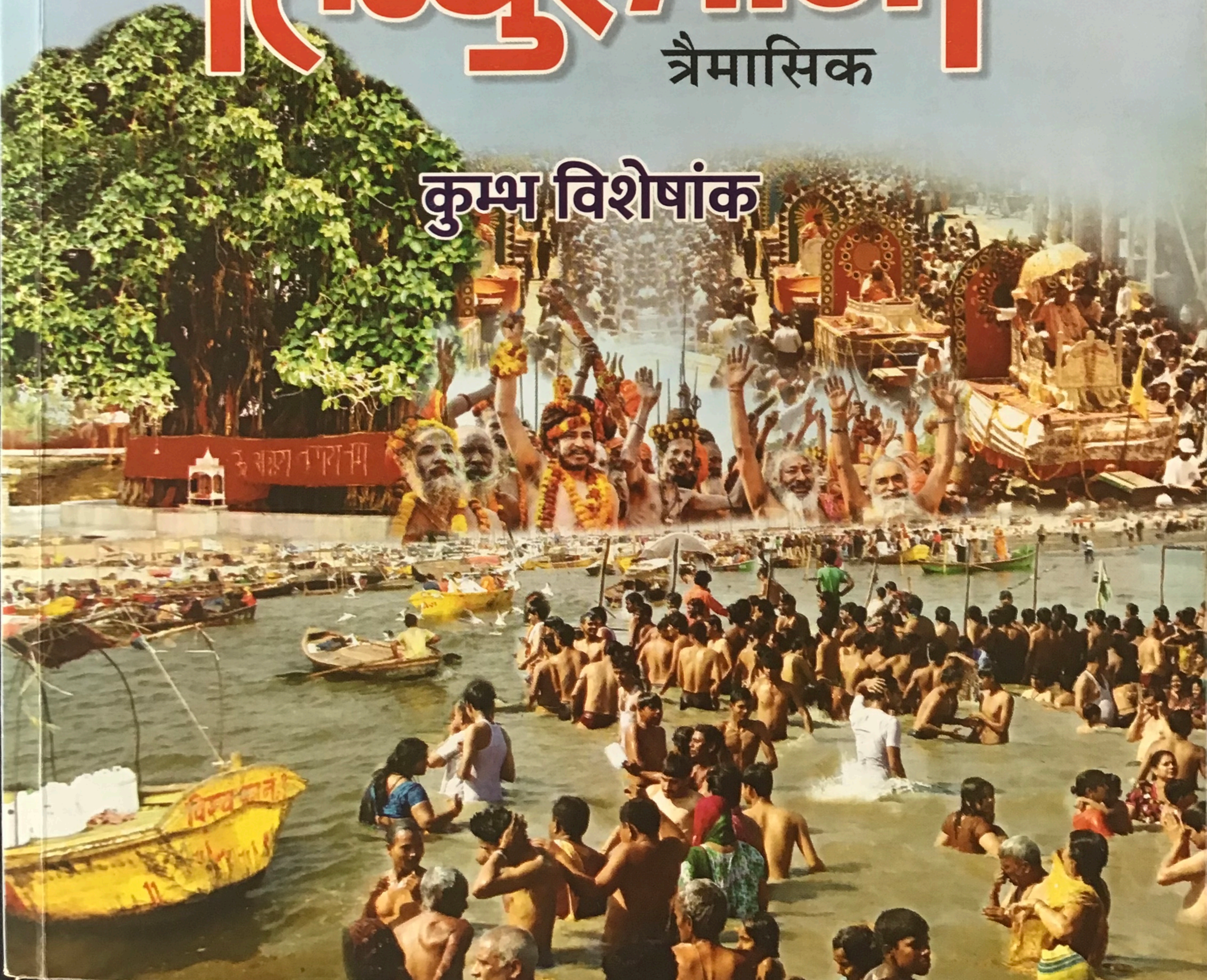
हमारे सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्मय में वेदों से लेकर मध्यकालीन हिन्दी भक्ति साहित्य तक, प्रयाग को तीर्थराज एवं त्रिवेणी संगम को सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल का पवित्रतम स्थान बताया गया है। विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद तक प्रयाग के संगम को महिमामण्डित करता हुआ कहता है कि जो श्वेत एवं नील नदियों के संगम पर स्नान करते हैं, वे सदा के लिये अमर हो जाते हैं। कवि कुलगुरु कालिदास का कथन है कि **यहाँ स्नान करने से दार्शनिक तत्वावबोध के बिना भी मोक्ष प्राप्त हो जाता है और जीव फिर से जन्म नहीं लेता।** मत्स्य, पद्म, कूर्म एवं भविष्य आदि पुराणों में **"प्रयाग-माहात्म्य"** के ऊपर स्वतन्त्र रूप से अनेक अध्याय लिखे गये हैं। महाभारत के अनुसार तीर्थ यात्रा के प्रसंग में सभी पाण्डव यहाँ आये थे, श्रीराम का चित्रकूट की ओर प्रस्थान करते समय प्रयाग के भारद्वाज मुनि-आश्रम में आगमन तो प्रसिद्ध ही है।

स्नान के अतिरिक्त प्रयाग में दान का भी अत्यधिक महत्व है। पुराणों के अनुसार त्रिवेणी तट पर किया गया दान सहस्त्रगुण अधिक फलदायी होता है- यही कारण है कि सम्राट हर्षवर्धन अपने समस्त संचित वैभव का दान करने के लिए प्रति पाँचवें वर्ष प्रयाग पधारते थे। गोदान, क्षौरकर्म, पितृतर्पण एवं श्राद्ध् आदि के लिये यह सर्वाधिक उपयुक्त स्थान माना गया है। **यहाँ देह त्याग के पश्चात् पुनर्जन्म नहीं होता, ऐसी दृढ़ मान्यता है, अतः प्रयाग आकर मृत्यु का स्वेच्छा से वरण करने वालों की कमी नहीं रही।** जहाँ कुमारिल आदि विद्वानों ने तुषाग्नि में अपना शरीर विसर्जित किया वहीं कलचुरि सम्राट कर्ण ने अपनी सौ रानियों के साथ संगम में प्रवेश करके मुक्ति प्राप्त की।

- प्रो० गया चरण त्रिपाठी
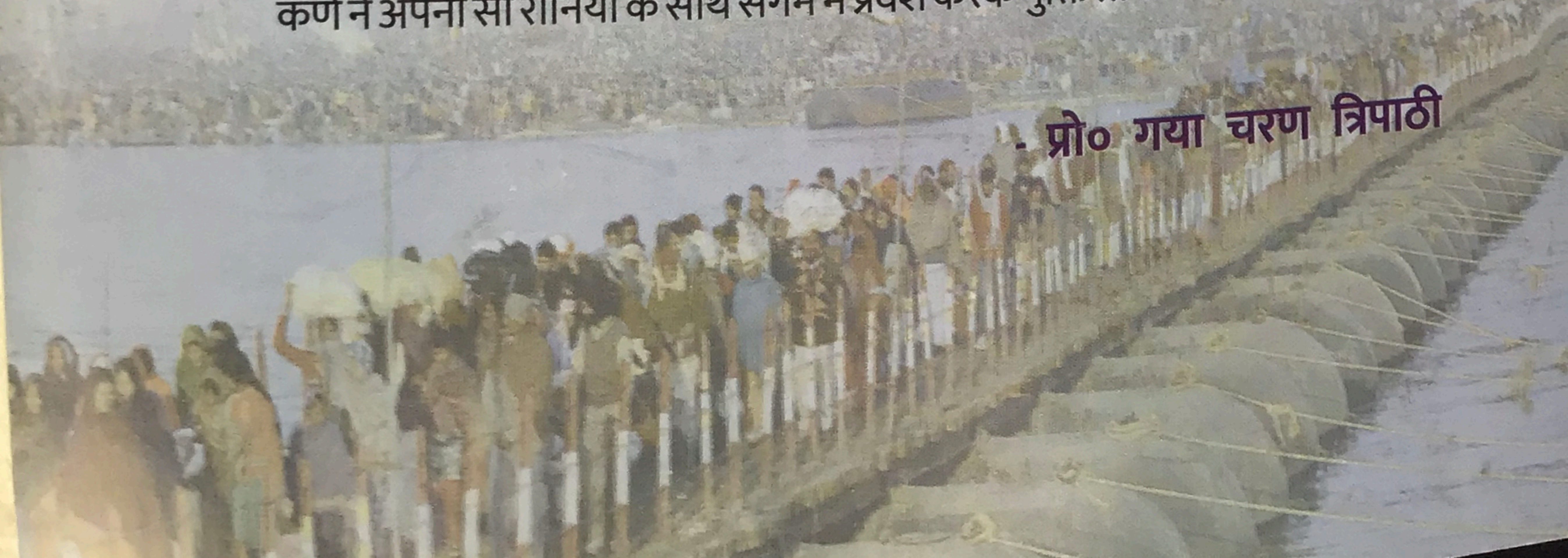
त्रैमासिक

कुम्भ विशेषांक

पौष-चैत्र, विक्रम संवत् २०७६
भाग - ८०, अंक - १
जनवरी - मार्च, २०१९
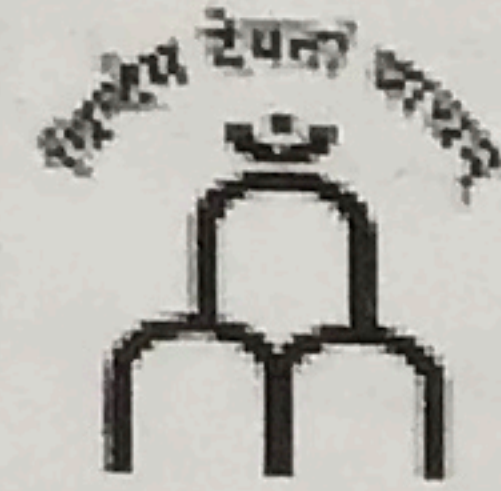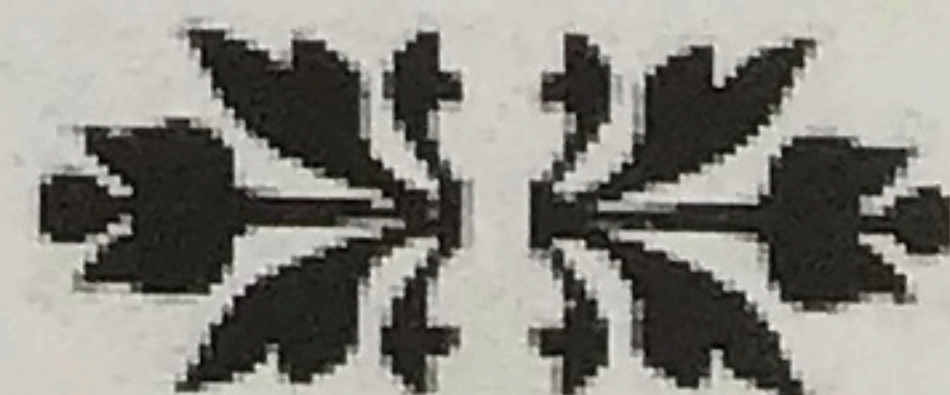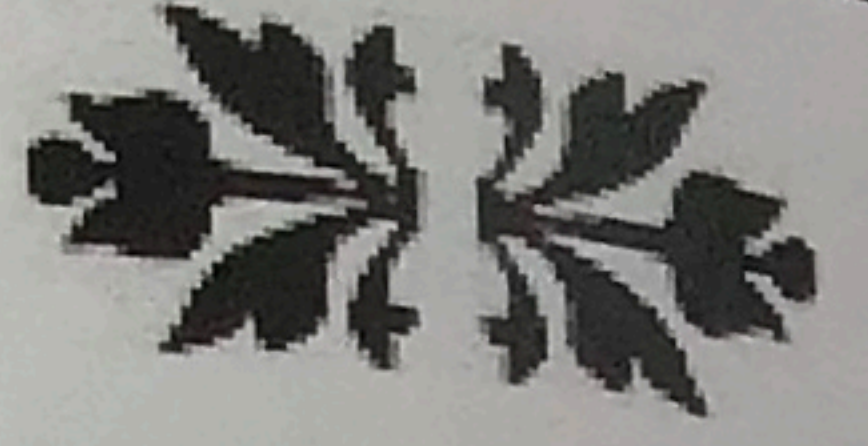
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
प्रयागराज

त्रैमासिक

भाग - ८०, अंक - १
जनवरी - मार्च, २०१९

ISSN : 0378-391X

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
१२ डी, कमला नेहरू रोड, प्रयागराज-२११००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५३२-२४०७६२५

website	:	http://hindustaniacademy.com
email	:	hindustaniacademyup@gmail.com
Facebook Profile name	:	hindustani academy allahabad
Twitter	:	hindustaniacademyup@gmail.com

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
शुल्क : **एक प्रति रु. ३०.००, वार्षिक : रु. १२०.००**
विशेषांक : रु. ५०.००

मुद्रक : **आस्था पेपर कन्वर्ट्र्स, प्रयागराज**

अनुक्रमणिका

कविताएँ

—❖—❖—

प्रो० सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव

कुम्भ पर्व का ज्योतिष शास्त्रीय आधार

भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों पर विशेष पर्वों पर आयोजित होने वाले धार्मिक मेलों की एक विशाल सूची है। इनमें प्रयाग का कुम्भ मेला निर्विवाद रूप से सर्वाधिक विराट् मेला है। इस मेले का इतिहास भी अत्यधिक प्राचीन है। कुम्भ नामक मेला भारतवर्ष के चार नगरों में अलग-अलग समयों पर आयोजित होता है। ये नगर हैं नासिक, उज्जैन, प्रयाग और हरिद्वार। कुम्भ का आयोजन चार स्थानों पर होने की मूल प्रेरणा अथर्ववेद की पंक्ति "चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि" (४/३७/७) से मिली हुई प्रतीत होती है।

ये चारों कुम्भ पवित्र नदियों के तट पर ही मनाये जाते हैं। नासिक का कुम्भ गोदावरी के तट पर, उज्जैन का कुम्भ शिप्रा के तट पर, प्रयाग का कुम्भ गंगा और यमुना के सम्मिलित तट पर और हरिद्वार का कुम्भ गंगा के तट पर होता है। प्रयाग के कुम्भ का माहात्म्य दो पवित्रतम नदियों के संगम पर होने से सर्वातिशायी हो गया है। कुम्भ पर्व के मूल में सिन्धुविमन्थन से प्राप्त अमृतपूर्ण घट की ही पौराणिक कथा बतायी जाती है जिसके अनुसार दैत्यों से छीने गये और परवर्तीकाल में गरूड़ द्वारा ले जाये गये अमृत कुम्भ की बूँदें उक्त चार स्थानों पर छलक कर उन सरिताओं के जल में मिल गयी थीं। उस अमृत जल के सम्मिश्रण से तत्तस्थानों पर उन नदियों के जलों की पवित्रता, अघमर्षणता और त्रिविधताप-निवारण-क्षमता में अद्भुत चमत्कार आना स्वाभाविक है। उसी चमत्कार से फलित ऐहिक आमुष्मिक कल्याण प्राप्त करने की उत्कट लालसा लिये हुए देश के कोने-कोने से लोग कुम्भ मेलों में आते है।

कुम्भ-पर्व के सामाजिक और धार्मिक महत्व के अतिरिक्ति ज्योतिष शास्त्रीय महत्व भी अपरिमित है।

पृथिव्यां कुम्भयोगस्य चतुर्धा भेद उच्यते।
चतुस्स्थले च पतनात् सुधाकुम्भस्य भूतले।।
विष्णुद्वारे तीर्थराजेऽवन्त्यां गोदावरीतटे।
सुधाबिन्दुविनिक्षेपात् कुम्भपर्वेति विश्रुतम् ।।

अभ्युदय और शाश्वतिक कल्याण की सम्भावनाओं से परिपूर्ण अत्यन्त श्रेष्ठ ग्रहनक्षत्रीय ज्योतिषशास्त्र में 'कुम्भ' शब्द का दो अर्थों में प्रयोग किया गया है। एक तो ग्यारहवीं राशि को 'कुम्भ' नाम दिया गया है और दूसरा चन्द्रमा को सूर्य के साथ एक ही राशि में स्थित होने पर 'कुम्भ या 'घट' कहा गया है। इनमें से राशि अर्थ वाला कुम्भ शब्द कुम्भ पर्व के सन्दर्भ में अप्रासंगिक है। हाँ, 'चन्द्र' सम्बन्धी कुम्भ शब्द की

सारवत्ता विवेचनीय है। भास्कराचार्य के 'सिद्धांत-शिरोमणि' नामक ग्रन्थ में चन्द्रमा की घटरूपता अधोलिखित श्लोक में वर्णित हुई है:-

तरणिकिरणसंगादेव पीयूषपिण्डो
दिनकरदिशिचन्द्रश्चन्द्रिकाभिश्चकास्ति।
तदितरदिशि बालाकुन्तलश्यामलश्री
र्घट इव निजमर्तिच्छाययेवातपस्थः।।

इस श्लोक में 'चन्द्रमा' को 'अमृतपिण्ड' कहा गया है। जब यह चन्द्रमा रूपी अमृतपिण्ड सूर्य के सामने की दिशा अर्थात् सूर्य से सातवें घर में स्थित होता है तब वह प्रकाशपुंज बन जाता है और किरणों से सुशोभित होता है। किन्तु जब वह सूर्य के साथ स्थित हो जाता है तो प्रकाश-रहित काले रंग का घट मात्र हो जाता है। अमृतपिण्ड चन्द्र की यह 'घट' रूप की स्थिति ही बृहस्पति के शुभ प्रभावों से प्रभावित होने पर 'कुम्भपर्व की मूलाधार बनती है। स्मृतियों की उक्ति है कि:-

सूर्येन्दुगुरूसंयोगस्तद्राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमौ कुम्भो भवति नान्यथा।

अभिप्राय यह है कि राशि-विशेष में सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति के स्थित होने पर यह अमृत कुम्भ रूपी चन्द, पृथ्वी पर उक्त चार स्थलों में शुभ प्रभाव रूपी अमृत बरसाता है। उसी की प्राप्ति न्यूनाधिक मात्रा में श्रद्धालु तीर्थ-यात्रियों को वहाँ स्थान-दान कल्पवासादि अनुष्ठानों में रत रहते हुए होती है।

इनका योग होने पर 'कुम्भ पर्व' का ऋषियों ने आयोजन किया है। नासिक, उज्जैन, प्रयाग और हरिद्वार- इन चारों स्थलों के कुम्भ पर्वो के आधारभूत ज्योतिषीय योगों पर सूक्ष्म दृष्टिपात करने से पता चलता है कि सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति इन तीनों श्रेष्ठ शुभ-ग्रहों की विशिष्ट स्थितियों पर ही 'कुम्भ' माना जाता है।

(१) नासिक के कुम्भ पर्व के समय सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति कर्क राशि में स्थित होते है।

(२) उज्जैन के कुम्भ पर्व के समय सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति सिंह राशि में रहते है।

(३) हरिद्वार के कुम्भ काल में सूर्य, चन्द्रमा मेष राशि में तथा बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थित होते है।

(४) इसी प्रकार प्रयाग के कुम्भ के लिये सूर्य और चन्द्रमा का मकर राशि और बृहस्पति का मेष अथवा वृष राशि में स्थित होना अनिवार्य होता है।

इन चार कुम्भ कालों में से नासिक के कुम्भ में सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति तीनों सर्वाधिक तेजस्वी तथा बलवान् और कल्याणकारी ग्रह 'चन्द्र' की स्वराशि कर्क में स्थित होते है। उज्जैन के कुम्भकाल में ये तीनों ग्रह सूर्य की स्वराशि सिंह में स्थित होते है इन दोनों कुम्भों में सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति की युति और वह भी स्वस्थगृह की युति अद्भुत रूप से कल्याणकारिणी होती है। हरिद्वार और प्रयाग के कुम्भकालों में इन तीन श्रेष्ठ ग्रहों की युति नहीं होती है बल्कि सूर्य और चन्द्र दो ग्रहों की तो युति होती है और बृहस्पति एक विशिष्ट स्थान में स्थित रहकर अपना मंगलमय प्रभाव संक्रमित करता है। हरिद्वार के कुम्भ योग में सूर्य और चन्द्र तो मेष राशि में युति की स्थिति बनाते है। और बृहस्पति उनसे दूर प्रभविष्णु उपचय स्थान अर्थात् ग्यारहवें भाव में स्थित होकर सूर्य और चन्द्र के मांगलिक फलों को अत्यन्त अधिक उपचित अर्थात् परिपुष्ट कर देता है। इस योग में सभी ग्रहों का राजा सूर्य स्वस्थ और मुदित होने की स्थिति से भी आगे बढ़कर उच्चस्थ होने के कारण अपनी दीप्त अवस्था में रहता है और अद्भुत शक्तिशाली हो जाता है।

प्रयाग के कुम्भकाल में दो प्रकार की ग्रह-स्थितियाँ रहती है। प्रथम स्थिति में सूर्य और चन्द्र की सूर्य पुत्र शनि के गृह अर्थात् मकर में युति होती है और बृहस्पति सूर्य के उच्चगृह अर्थात् मेष में स्थित होकर सूर्य चन्द्र से केन्द्र स्थान का सम्बन्ध बना लेता है। दूसरी में भी सूर्य और चन्द्र की मकर में युति होती है और बृहस्पति चन्द्र के उच्चगृह अर्थात् वृष राशि में स्थित होकर सूर्य चन्द्र को पूर्ण दृष्टि से देखता है। बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि (पाँचवें या नौवें स्थान पर) की शुभता तो ज्योतिषशास्त्र की स्वयंसिद्धि के रूप में सर्वविदित ही है। इन दोनों ही स्थितियों में बृहस्पति सूर्य या चन्द्र के उच्चगृह में स्थित होकर पारस्परिक केन्द्रस्थता अथवा अपनी पूर्ण दृष्टि के श्रेष्ठ मांगलिक योग प्राप्त कर लेता है।

पूर्व कुलपति,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

—❖—❖—
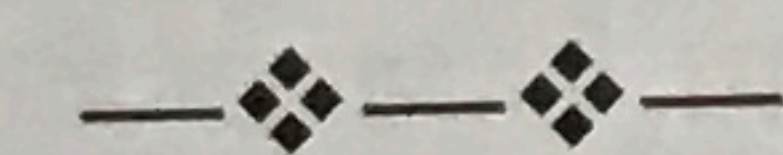
प्रयाग का कुम्भ अथवा अर्द्धकुम्भ एक ऐसा विशाल पर्व है जहाँ सनातन हिन्दू संस्कृति अपने सम्पूर्ण वैभव-समृद्धि और सौन्दर्य के साथ समुपस्थित रहती है। यह आर्य संस्कृति का वृहत्तम मिलन बिन्दु है। भाषा, जाति-पाँति, सम्प्रदाय, विचारधारा, वेश-भूषा सबकों एक रंग में रंगता प्रयाग का मेला राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा दृष्टांत है। उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, निर्गुण-सगुण, शैव-वैष्णव, शाक्त-स्मार्त सभी तो यहाँ अपनी धूनी रमाते हैं। कहीं दशनामी अखाड़ों-जूना, अग्नि , निरंजनी, आवाहन, महानिर्वाणी, अटल बड़ा उदासीन, नया उदासीन तथा निर्मल का वितान तना होता है तो कहीं सन्यासी, भक्त, गृहस्थ, नागा जमात की जमात दृष्टिगत होते हैं। भजन, कीर्तन, प्रवचन, उपदेश, रास-लीला, योग, हाथी-घोड़े, यज्ञ के धुएँ, गाजे-बाजे, वेद-मंत्रों की ध्वनियाँ, भजनानन्दियों के गेय पद, नागा सन्यासियों की चमकती तलवारें, भाला और बर्छी, ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति की त्रिवेणी सब कुछ तो एक ही परिसर में दिखायी पड़ता है। आस्तिक सम्प्रदाय मेला-भूमि पर अपनी पारंपरिक शैली में साधनारत दिखायी पड़ते हैं। नास्तिक सम्प्रदाय के लोग अपने मत के प्रचार-प्रसार में तल्लीन रहते हैं। कहीं कल्पवासी रेत की शीतलता में बैठकर अपनी धार्मिक प्रतिज्ञाएँ पूर्ण कर रहे होते हैं तो यत्र-तत्र, संन्यासी, साधु और योगी अपने ज्ञान और शरीर के चमत्कार से सबको चमत्कृत कर रहे होते हैं। धर्म की यह ऊर्ध्व चेतना आत्म-परमात्म को तो जोड़ती ही है, मनुष्य को मनुष्य के सन्निकट भी लाती है। साधना के इस काल में प्रकृति का अशेष साहचर्य-सुख भी खूब प्राप्त होता है।

- डॉ. उदय प्रताप सिंह
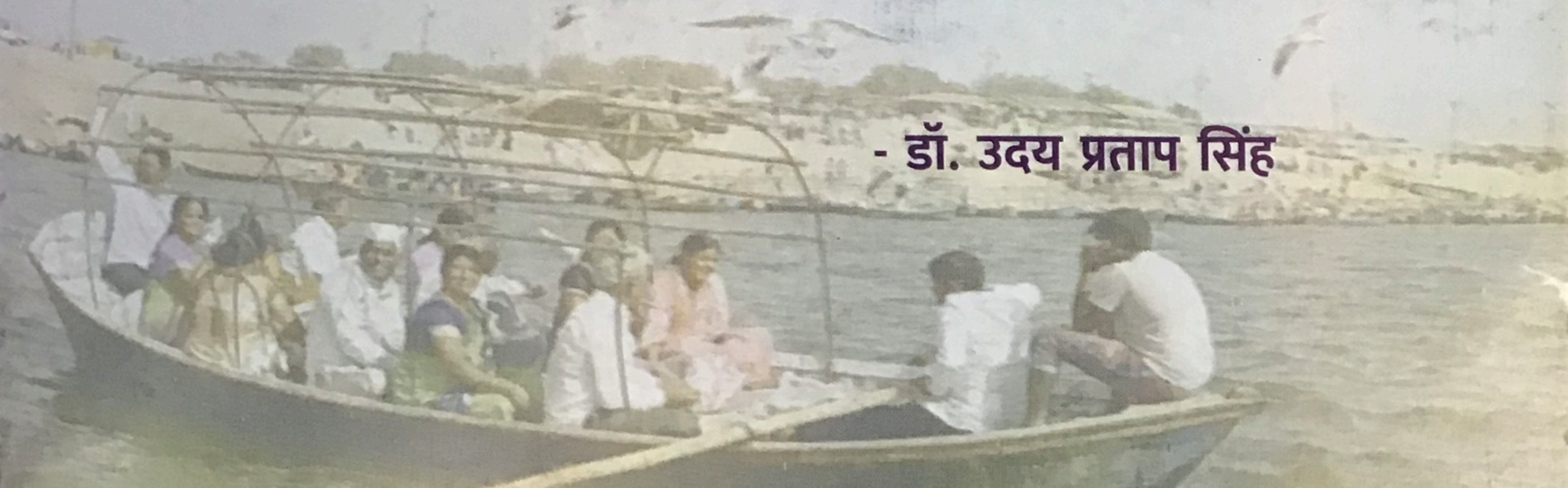
हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा सम्पादित महत्त्वपूर्ण संदर्भ-ग्रन्थ

1. कबीर और कबीर के प्रतिबिम्ब
2. सूर काव्य : दृष्टि एवं विमर्श
3. तुलसी साहित्य : अभिव्यक्ति के विविध स्वर
4. जायसी आलोचना के निकष पर
5. निराला : काव्य चेतना के अन्तर्द्वन्द्व
6. महाकवि सुमित्रानन्दन पंत : सृजन एवं चिन्तन
7. प्रेमचन्द : सृजन एंव चिन्तन
8. फिराक़ : शख़्सियत और फ़न
9. लोक साहित्य अभिव्यक्ति और अनुशीलन
10. रामविलास शर्मा और हिन्दी आलोचना
11. अदब के सुख़नवर और उनका अंदाजे-बयाँ
12. काव्य संवेदना और हिन्दी कविता
13. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी : एक विमर्श
14. संस्कृति पुरुष पण्डित विद्यानिवास मिश्र
15. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : एक दृष्टि
16. हिन्दी नाटक और रंगमंच

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
१२-डी, कमला नेहरु मार्ग
प्रयागराज - २११००१ दूरभाष : २४०७६२५
website : http://hindustaniacademy.com
email : hindustaniacademyup@gmail.com

ISSN 0378-391X